आपकी दीपावली-कविताओं के लिए धन्यवाद

२८ नवम्बर, २०२३

आत्मीय पाठक,

कृतज्ञता के माह की शुभकामनाएँ!

कृतज्ञता का सद्गुण जितना सार्वभौमिक है, हर व्यक्ति द्वारा की गई इसकी अभिव्यक्ति भी उतनी ही अनूठी होती है। मैंने पाया है कि एक बार जब कृतज्ञता के सभी विविध रंगों में इसकी अनुभूति होने लगती है, तब पता चलता है कि यह अपने आप में कितनी बड़ी सौग़ात है। यह ऐसी सौग़ात है जो बस देती ही रहती है।

सिद्धयोग पथ पर, हमने इस माह का आरम्भ किया, श्रीगुरुमाई के संग दीपावली मनाने के साथ—हमने गुरुमाई जी की कविता पढ़ी व सुनी, गुरुमाई जी के दर्शन किए, गुरुमाई जी के साथ दिए जलाए, बच्चों के साथ गुरुमाई जी का वीडिओ देखा और भारतीय नव-वर्ष में साथ मिलकर प्रवेश किया। नवम्बर माह के आगे बढ़ने के साथ-साथ, हम एक संघम् के रूप में 'थैन्क्स्गिविंग' के पर्व में भाग लेते रहे हैं और अपनी कृतज्ञता के स्पन्दनों को इस जगत के कण-कण में झंकृत होने देते रहे हैं।

यह अत्यन्त महत्त्वपूर्ण है कि हम अपनी कृतज्ञता को आपस में बाँटें और एक-दूसरे के प्रति अपना आभार व्यक्त करें। अभी हाल ही में, मैंने किसी को गुरुमाई जी को बताते हुए सुना कि जब वह समाचार पढ़ती है—विशेषकर पिछले दो माह में जब उसने ऐसा किया है—तो वह बहुत निराश हो जाती है। वह महसूस करती है कि जैसे-जैसे इतिहास अपने आप को दोहरा रहा है, जैसे-जैसे लोगों की बढ़ती घृणा हिंसा में बदल रही है, वह उम्मीद खोती जा रही है। पर फिर, जब वह सिद्धयोग पथ की वेबसाइट देखती है तो उसके लिए वह क्षण जागने जैसा होता है, "ओह, मैं अपना प्रकाश लोगों तक पहुँचा सकती हूँ, मैं अपनी कृतज्ञता व्यक्त कर सकती हूँ। ऐसा कुछ सकारात्मक *है*, जो मैं कर सकती हूँ।" तत्काल ही उसका उत्साह बढ़ जाता है।

और कितनी बढ़िया बात है कि आप में से बहुतों ने भी सकारात्मक क़दम उठाना आरम्भ किया है। जैसे ही आपको गुरुमाई जी की दीपावली की कविता में उनका आदेश मिला, आपने अपनी कविताएँ लिखना शुरू कर दिया कि कैसे इस संसार में आलोक लाया जाए।

आपने देखा ही होगा कि पिछले कुछ सप्ताहों से प्रतिदिन, आपकी कविताएँ वेबसाइट पर आ रही हैं। ३०० से भी अधिक कविताएँ वेबसाइट को भेजी गई हैं जिनमें से सौ से भी अधिक कविताएँ वेबसाइट पर पोस्ट हो चुकी हैं। ऐसे सिद्धयोगी बच्चों की कविताएँ भी मिली हैं जो अभी चार वर्ष के ही हैं! भारत, ऑस्ट्रेलिया, मॅक्सिको, तुर्किए, इटली, स्पेन, पुर्तुगाल, कैनेडा, स्विट्ज़रलैंड, यूनाइटेड किंग्डम और अमरीका—संसार भर के कितने ही देशों के सिद्धयोगियों की कविताएँ आई हैं। इनमें से बहुत-सी कविताएँ अँग्रेज़ी के अलावा अन्य भाषाओं में भी हैं।

मैं प्रभावित हूँ आपके शब्दों से, आपके काव्य-कौशल से। मुझे हमेशा इस बात पर आश्चर्य होता है कि भले ही हम सभी सिद्धयोग पथ का अनुसरण कर रहे हैं, फिर भी हरेक के पास अभिव्यक्त करने का अपना एक स्पष्ट नज़रिया है, अपने अन्दर जाग्रत हुए प्रकाश को बाँटने का अपना ही विशिष्ट तरीक़ा है। और यही तो बात है कि इनमें से हरेक कविता प्रकाश बिखेर *ही रही है*—चाहे लिखने वाला किसी भी आयु का हो या किसी भी स्थान से हो, चाहे वह अपनी साधना में कहीं भी हो। आपने अपने शब्दों को चुनते समय और अधिक सचेत रहने के बारे में लिखा है; दूसरों को देखकर मुस्कराने के बारे में लिखा है; जिस कला का आप सृजन करेंगे, उसके बारे में लिखा है; आप कैसे बनें, कैसा व्यवहार करें, इसके लिए प्रकृति से संकेत ग्रहण करने व उनसे सीखने के बारे में लिखा है; अन्तर्मुख होकर, जागरूक रहते हुए कृतज्ञता व्यक्त करने के बारे में लिखा है। मेरे लिए यह देखना अत्यन्त प्रेरणादायी रहा है कि आप कितने विभिन्न तरीक़ों से संसार में प्रकाश पहुँचा रहे हैं, और जब आप यह चिन्तन करते हैं कि आप आगे और क्या प्रयास कर सकते हैं तब आपकी कविता के एक-दो पदों में कुछ क्षणों के लिए आपके साथ शामिल होना भी मुझे प्रेरित करता रहा है।

पिछले कुछ वर्षों में जब मैंने श्रीगुरुमाई की ओर से आपको कुछ करने के लिए आमन्त्रण दिया है तब मुझे श्रीगुरुमाई की ओर से आपको धन्यवाद देने का सौभाग्य भी मिला है। आभार व्यक्त करना सिद्धयोग पथ की एक परम्परा है, ऐसी परम्परा जो श्रीगुरुमाई ने सबको सिखाई है। इस परम्परा को जारी रखते हुए मुझे अत्यन्त प्रसन्नता हो रही है, विशेषकर कृतज्ञता के इस माह में।

इतना ही नहीं, आपने इसे कितना *आसान* बना दिया है कि मैं आपको धन्यवाद दे सकूँ। जब मैं आपकी कविताएँ पढ़ती हूँ तो मुझे कृतज्ञता की अनुभूति होती है। जब आप उन कल्याणकारी कार्यों के विषय में लिखते हैं जो आपने किए हैं और करेंगे तो मुझे आपके दृढ़ विश्वास का अनुभव होता है।

जब मैंने पहले पहल आपकी कविताएँ पढ़ीं तो मुझे ऐसा अनुभव हुआ कि वे आतिशबाज़ी की तरह हैं, प्रकाश और उल्लास और ऊर्जा की चिंगारियों जैसी हैं। और संयोग की बात देखिए, दो दिन बाद ही, मैंने देखा कि वेबसाइट के पेज पर उसी की तस्वीरें हैं. . . आतिशबाज़ी की तस्वीरें! मुझे ऐसा लगता है कि आपकी कविताओं द्वारा प्रज्वलित चिंगारियों को यदि एक-साथ जोड़ दें तो उनमें वह सामर्थ्य है कि वे सम्पूर्ण आकाश को जगमगा सकती हैं।

आशा करती हूँ कि यह पत्र भी आपके इस वर्ष के उत्सवों में कुछ अतिरिक्त रोशनी लेकर आया है। एक बार फिर, आपकी ख़ूबसूरत कविताओं के लिए धन्यवाद।

सस्नेह,
ईशा सरदेसाई

© २०२३ एस. वाय. डी. ए. फ़ाउन्डेशन®। सर्वाधिकार सुरक्षित।